महर्षि वाल्मीकि भगवान की जयन्ती पर माननीय अध्यक्ष जी का संबोधन

महर्षि वाल्मीकि भगवान की जय। आज शरद पूर्णिमा और महर्षि वाल्मीकि भगवान की जयन्ती पर हमारे बीच में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विधायक माननीय सतीश पूनिया जी, रामगंज मण्डी के यशस्वी विधायक माननीय मदन दिलावर जी, वाल्मीकि भगवान की जयन्ती और उनके संदेश को देश के जन-जन तक पहुंचाने के लिए लगातार कार्य करने वाले अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉक्टर विश्वनाथ जी, ओम हरिन जी, जिन्होंने महर्षि वाल्मीकि के बारे में संस्कृत और देश के अलग-अलग क्षेत्रों की बातों को रखा, अपेक्षाओं को रखा, श्री राम गोपाल वाजा जी और मंच पर विराजे सभी अतिथिगण और यहां पर आए मेरे सभी वाल्मीकि समाज और उससे जुड़े भाइयो और बहनो**!**

आज हम सब इस शरद पूर्णिमा पर भगवान महर्षि वाल्मीकि भगवान को याद कर रहे हैं। हमारा देश एक आध्यात्मिक संस्कृति एवं विविध धर्मों को मानने वाला देश है, जहां हमारे महापुरुषों के माध्यम से समाज में, समाज सुधारकों के रूप में जिन लोगों ने इस समाज में योगदान दिया, भगवान महर्षि वाल्मीकि जी, जिन्होंने भगवान राम को शाश्वत रूप से, अपने मन, कर्म और वचन से भगवान राम के विचारों को, उनके जीवन दर्शन को समाज के अंदर रखा, अलग-अलग भाषाओं के अंदर रखा और आज भारत में ही नहीं, पूरी दुनिया के अंदर महर्षि वाल्मीकि जी की लिखी रामायण यादगार है, स्मृतियां हैं और लोग अलग-अलग तरीके से भगवान राम के जीवन दर्शन को बताते हैं।

मैं अभी **8** तारीख को इंडोनेशिया से आया हूं और इंडोनेशिया में जावा और बाली में भगवान श्री राम के चरित्र का चित्रण होता है और वहां पर अलग-अलग देशों के लोग भगवान राम की लीला को देखने आते हैं। उस अद्भुत दृश्य को मैंने देखा।

मैंने कम्बोडिया के अंदर अंकोरवाट मंदिर भी देखा, जहां **11**वीं शताब्दी के, भगवान राम की मूर्तियों के चित्रण के आधार पर भगवान राम के जीवन दर्शन को बताया गया है, महाभारत के जीवन दर्शन को बताया गया है।

आपने सही कहा है कि महर्षि वाल्मीकि जी ने रामायण को, राम दर्शन को केवल भारत में ही नहीं, दुनिया के अलग-अलग देशों के अंदर, अलग-अलग भाषाओं और अलग-अलग तरीकों से भगवान राम के चरित्र और जीवन दर्शन को बताया है।

मुझे खुशी है कि आज भारत **21**वीं शताब्दी में भी भगवान राम और भगवान श्री कृष्ण के चरित्र पर चलने का संकल्प ले रहा है। भगवान श्री राम ने जहां आदर्श जीवन जी कर दुनिया को संदेश दिया कि व्यक्ति का आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए, किस तरीके का व्यक्ति का चरित्र होना चाहिए, वह उदाहरण भगवान श्री राम के जीवन दर्शन से मिलता है।

भगवान श्रीकृष्ण के कर्म दर्शन के माध्यम से जीवन के अंदर व्यक्ति का कर्म करना, यह सिद्धांत भगवान श्रीकृष्ण ने दिया। भगवान श्री राम और भगवान श्री कृष्ण के अलग-अलग विचारों को, उनके दर्शन को कई महापुरुषों ने अलग-अलग तरीके से लिखा।

जब हम महर्षि वाल्मीकि जी को याद करते हैं तो उस समय महर्षि वाल्मीकि जी ने भगवान श्री राम के चरित्र को जिस दृष्टि से दिखाया कि समाज में सब व्यक्ति बराबर हैं। न कोई समाज में ऊंचा है, न कोई नीचा है। उन्होंने जाति व्यवस्था पर प्रहार किया और यह कहा कि व्यक्ति जाति से नहीं, उसके कर्म की श्रेष्ठता से श्रेष्ठ बनता है।

वाल्मीकि समाज के लोग जो कर्म करते हैं, वह सबसे श्रेष्ठ कम करते हैं, समाज की स्वच्छता का काम करते हैं। इसीलिए आज भारत के अंदर भी वाल्मीकि समाज का सम्मान सबसे बड़ा सम्मान है।

इसीलिए, मैं जितना भी वाल्मीकि समाज के लोगों को जानता हूं, वे आध्यात्मिक रूप से, धर्म के रूप से और अध्यात्म एवं धर्म के माध्यम से अपने चरित्र निर्माण के साथ व्यक्तित्व निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं। उनमें एक अटूट आस्था है, विश्वास है और किस तरीके से भगवान श्री राम के पदचिह्नों पर चलते हुए एक आदर्श जीवन, एक सात्विक जीवन, सत्य के मार्ग पर चलने वाला जीवन जी रहे हैं।

अभी कुछ दिन पहले हमने दशहरे पर रावण दहन किया है। रावण दहन का अर्थ है अहंकार को समाप्त करना, पाप का विनाश करना। हमारे जीवन के अंदर पाप और अहंकार समाप्त हो और इस पाप-अहंकार को समाप्त

करने का काम किसने किया – वाल्मीकि समाज के लोगों ने किया। न उनमें अहंकार होता है, न वे पाप की दृष्टि से देखते हैं। हमेशा समाज में पुण्य हो सके, समाज की सेवा हो सके, समर्पण और सेवा के रूप में वाल्मीकि समाज जैसा कोई समाज नहीं है।

इसीलिए, आज भगवान श्री राम के जीवन दर्शन को देखते हैं तो भगवान श्री राम के शिष्य के रूप में वीर हनुमान की पूजा दुनिया के अंदर सबसे ज्यादा होती है। जिस तरीके का समर्पण और सेवा का भाव वीर हनुमान जी में था, लोग इसी सेवा और समर्पण के कारण उनको सबसे ज्यादा पूजते हैं।

यही कारण है कि युद्ध लड़ा अर्जुन ने, भगवान श्रीकृष्ण ने उनको संदेश दिया, कर्म का संदेश दिया। भगवान श्रीकृष्ण, जो अर्जुन को योद्धा बना रहे थे, खुद भी युद्ध लड़ सकते थे, लेकिन व्यक्ति के जीवन में कर्म और कर्म-सिद्धांत को उन्होंने अपनाया कि व्यक्ति कर्म के आधार पर श्रेष्ठ बनता है और व्यक्ति को कर्म करना चाहिए, अहंकार नहीं करना चाहिए। कर्म जीवन का हिस्सा होना चाहिए, इसलिए कर्म के रूप में भी वाल्मीकि समाज का बहुत बड़ा योगदान है।

मैं कह सकता हूं कि जो विचार राम गोपाल जी ने रखे हैं, एक श्रेष्ठतम विचार है कि जितना हम महर्षि वाल्मीकि जी को याद करेंगे, दुनिया के अंदर अलग-अलग देशों में याद कर रहे हैं, भारत के अंदर महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन, दर्शन, उनके विचार, सिद्धांत और उनके सत्य के मार्ग पर चलने वाले विचार आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देंगे। इसीलिए, भारत के अंदर हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि हमें विरासत को हमेशा जीवन्त रखना है।

हमारी विरासत और हमारी भारतीय संस्कृति हमें आध्यात्मिक रूप से धर्म के मार्ग पर कायम रखती है। कोई भी श्रेष्ठ शासन वही होता है, जो धर्म से चले, किसी भी धर्म की पूजा-उपासना का अगर दुनिया के अंदर कोई सबसे बड़ा केन्द्र है, तो वह हिन्दुस्तान है, जहां सभी धर्मों और पूजा-उपासना को सम्मान दिया जाता है। दुनिया के अंदर धर्म के आधार पर कई देश हैं, लेकिन भारत की यह विविधता है कि यहां सब धर्मों का सम्मान किया जाता है। व्यक्ति की श्रेष्ठता का सम्मान किया जाता है। यही भारत की धरती और संस्कृति है। इसलिए उन्होंने जो बातें कही

हैं, निश्चित रूप से मैं कह सकता हूं कि वाल्मीकि समाज से हमेशा से मेरा बहुत स्नेह-प्यार रहा है, उनका आशीर्वाद मुझे मिला है।

जिन-जिन विषयों को उन्होंने रखा है, उनसे भी जो हटकर विषय होंगे, मै निश्चित रूप से उपयुक्त मंच पर उन बातों को पहुंचाऊंगा। मेरी कोशिश है और अगर आप सरकार से बात करें और वे जमीन दे दें, तो महर्षि वाल्मीकि जी की एक मूर्ति लगाएं, जिससे आने वाला व्यक्ति जब महर्षि वाल्मीकि जी को देखे, उनके जीवन दर्शन को देखे, तो उस जीवन दर्शन से आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा मिले। आने वाली पीढ़ी महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन को अपने जीवन में आचरण बनाए, व्यवहार में अपनाए। इसीलिए, आज हम सब लोग महर्षि वाल्मीकि जी को याद कर रहे हैं।

मैं विशेष रूप से हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्वनाथ जी को, ओम हरिन जी को एवं सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

हम अगली बार जब महर्षि वाल्मीकि जी की जयन्ती मनाएंगे तो बड़े स्तर पर महर्षि वाल्मीकि जी की जयन्ती मनाएंगे, जिसमें हम देश के बड़े-बड़े लोगों को यहां बुलाएंगे।

उनकी तीन दिनों तक महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन पर एक पूरा सेमिनार चलाएंगे। उसमें अलग-अलग क्षेत्रों के महर्षि वाल्मीकि जी के विचारों को, शोध को, रिसर्च को लिखने वाले लोग आएंगे। किस तरीके से महर्षि वाल्मीकि जी की रामायण और उनके जीवन दर्शन को लिखा है, मुझे अभी दिल्ली में कुछ लोग मिले थे, लेकिन वे मुझे लेट मिले, इसलिए मैं उस कार्यक्रम का आयोजन नहीं कर पाया।

मैं सभी आयोजकों को कहूंगा कि अगली बार हम तीन दिनों तक महर्षि वाल्मीकि महोत्सव मनाएंगे और वह उत्सव उत्साहपूर्ण होगा और उससे हमारी संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान से नई पीढ़ी को नए संस्कार, नई चेतना, नई ऊर्जा मिलेगी। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।